P/Th
11771
P/Th
11771

: महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, बड़ौदा की
पी-एच.डी. (हिन्दी) उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध प्रबंधकी
सार-संक्षेपिका (Summary)

: विषय :

" हिन्दी उपन्यासों में चित्रित वेश्या - जीवन : एक अध्ययन "

Fwd.
Ex Professor & Head,
Dept. of Hindi
Faculty of Arts
M. S. U., Baroda.
23-8-07

: अनुसंधित्सु :
प्यारेलाल बी. कहार
शोध छात्र हिन्दी-विभाग,
म. स. विश्वविद्यालय, बड़ौदा।

- निर्देशक -
डॉ. पारुकांत देसाई
प्रोफेसर एवं पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी-विभाग,
म. स. विश्वविद्यालय, बड़ौदा।

हिन्दी विभाग, कला संकाय
महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, बड़ौदा, गुजरात
सन् 2007 ई.

:: महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, बड़ौदा की पी-एच.डी.
{हिन्दी} उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध-प्रबंध की सार-संक्षेपिका ::
{SUMMARY}

"साहित्य" का जो व्यापक अर्थ है उसमें तो हाथी के पैर के समान सबकुछ आ जाता है। जो कुछ भी वाणीमय है, वाङ्मय है, साहित्य है। अंग्रेजी शब्द "लिटरेचर" में भी लगभग वही अवधारणा है। किन्तु व्यापक अर्थ वाले इस "साहित्य" को विद्वानों ने "काव्य" और "शास्त्र" में विभाजित किया है। अंग्रेजी में डिक्वेन्सी ने इस व्यापक अर्थ वाले "लिटरेचर" को दो खण्डों में विभक्त किया है — "लिटरेचर आफ पावर" तथा "लिटरेचर आफ नोलेज"। प्रथम हमारे यहां का काव्य है और दूसरा शास्त्र। संस्कृत में "काव्य" शब्द का अर्थ केवल "कविता" नहीं था। "काव्य" में साहित्य के सभी रूप आ जाते हैं।

कविवर रवीन्द्रनाथ टैगोर ने कहा है -- जिन्होंने "काव्य" और "शास्त्र" दोनों को पढ़ा है , वे संसार में सबसे ज्यादा भाग्यशाली हैं , जिन्होंने केवल "काव्य" पढ़ा है और "शास्त्र" नहीं उनका भाग्य मध्यम है और जिन्होंने केवल "शास्त्र" पढ़ा है , "काव्य " नहीं उनका भाग्य तो मंदातिमंद है । मुझे इस बात की प्रसन्नता है कि मुझे दोनों को पढ़ने का अवसर प्राप्त हुआ है । प्राथमिक और माध्यमिक कक्षाओं से ही मेरी रूचि उभय की ओर रही है । सद्भाग्य से मुझे गुरु भी ऐसे मिले हैं जो निरंतर अपनी कक्षाओं में कहते रहे हैं कि "साहित्य" वालों को "शास्त्र" भी पढ़ना चाहिए ।

इस प्रकार की सोच के तहत मैंने प्रस्तुत विषय का चयन किया । मेरे विषय का सम्बन्ध जितना साहित्य से है , उतना ही समाजशास्त्र , मनोविज्ञान , इतिहास , पुरातत्व , समाज-मनोविज्ञान , कामशास्त्र आदि शास्त्रों से है । अतः अपने अध्ययन में मैंने इनका समुचित रूप से विनियोजन भी किया है । सर्वप्रथम तो मेरे विषय को लेकर कुछ लोगों ने प्रश्न उठाये कि ऐसे विषय पर कार्य करना कहां तक उचित है । ऐसे लोगों की सोच बहुत ही संकुचित है । वे इस विषय को गोपनीय और किसी हद तक अश्लील भी समझते हैं । किन्तु हमें यहां ध्यान रखना चाहिए कि यह वह देश है जिसमें "कामशास्त्र" पर लिखने वाले वात्स्यान को ऋषि का दरज्जा दिया गया है । अजण्टा , इलोरा , खजुराहो और कोणार्क के शिल्प क्या कहते हैं ? हमारी सोच तो ऐसी संकुचित कभी नहीं रही । वात्स्यायन कामसूत्र के प्रारंभ में ही "धर्मार्थकामेभ्यो नमः " कहा गया है , अर्थात् "धर्म , अर्थ और काम को नमस्कार है । पुरुषार्थ-चतुर्थ के "मोक्ष" का यहां उल्लेख नहीं है । इसका अर्थ यह है कि जो व्यक्ति धर्म , अर्थ और काम का प्रयोग विवेक-संपन्न होकर और अनुशासन में रहकर करेगा , उसे "मोक्ष" अर्थात्

मुक्ति-लाभ तो होना ही है । इसी कामसूत्र में कहा गया है कि जो व्यक्ति कामी बनकर , अत्यन्त रागात्मक भाव से इस शास्त्र का अध्ययन और प्रयोग करता है उसे कथमपि परिपूर्ण सिद्धि नहीं मिल सकती ह , किन्तु जो विवेकशील , कुशल विद्वान् धर्म और अर्थ को दृष्टिगत रखकर इसका उपयोग करता है उसे पूर्ण सिद्धि मिलती है । यथा - " धर्ममर्थं च कामं च प्रत्ययं लोकमेव च । पश्यत्येतस्य तत्वज्ञो न च रागात्प्रवर्तते ।। " { कामसूत्रम् - पृ॰ 734 } अर्थात् इस कामशास्त्र के तत्व को भलीभांति समझने वाला व्यक्ति धर्म , अर्थ , काम , आत्मविश्वास और लोकाचार को देखते हुए प्रवृत्त होते हैं न कि राग या कामुकता से ।

अभिप्राय यह कि मेरा यह विषय अनेक शास्त्रों से जुड़ा हुआ है । उपन्यास इस नये युग की नयी विधा है । उपन्यासों में वेश्या-समस्या का चित्रण तो प्रारंभ से ही हो रहा है । पूर्व-प्रेमचंद काल के लेखकों में लाला श्रीनिवासदास , मेहता लज्जाराम शर्मा , पं. किशोरीलाल गोस्वामी आदि के उपन्यासों में हमें वेश्या-समस्या और वेश्या-जीवन का चित्रण उपलब्ध होता है । प्रेमचंद काल के लेखकों में स्वयं प्रेमचंद , विश्वम्भरनाथ शर्मा "कौशिक" , पांडेय बेचन शर्मा "उग्र" , ऋषभचरण जैन आदि कई लेखकों ने इस विषय पर कलम चलाई है । प्रेमचन्दोत्तरकाल , स्वातंत्र्योत्तर काल , साठोत्तरी उपन्यास , समकालीन उपन्यास इत्यादि औपन्यासिक विकास के सभी सोपानों में हमें इस विषय का चित्रण मिलता है ।

भारतीय वाङ्मय में वैदिक साहित्य , उपनिषद , जातक-कथाओं , प्राचीन एवं मध्यकालीन साहित्य सर्वत्र इस विषय का आकलन किसी-न-किसी रूप में हुआ है । औपन्यासिक आलोचना के क्षेत्र में वेश्या-समस्या के अन्तर्गत अनेक विद्वानों ने इस विषय का निरूपण किया है । किन्तु नारी-जीवन की अन्य समस्याओं के साथ

एक समस्या के रूप में इसका आकलन हुआ है । डा. कुंअरपाल सिंह के ग्रन्थ "हिन्दी उपन्यास : सामाजिक चेतना ", डा. बिन्दु अग्रवाल के शोध-ग्रन्थ " हिन्दी उपन्यास में नारी-चित्रण ", डा. मोहम्मद अज़हर ढेरीवाला के शोध-प्रबंध " आधुनिक हिन्दी उपन्यासों में नारी के विविध रूपों का चित्रण ", डा. पारुकान्त देसाई कृत "आधुनिक लेखिकाओं के नगरीय परिवेश के उपन्यास " तथा " हिन्दी उपन्यास साहित्य की विकास परंपरा में साठोत्तरी उपन्यास ", डा० रामदरश मिश्र कृत " हिन्दी उपन्यास : एक अन्तर्यात्रा ", डा. त्रिभुवनसिंह कृत " हिन्दी उपन्यास और यथार्थवाद ", डा. चण्डीप्रसाद जोशी कृत " हिन्दी उपन्यास : समाजशास्त्रीय अध्ययन ", डा. महेन्द्र चतुर्वेदी कृत " हिन्दी उपन्यास : एक सर्वेक्षण " आदि आलोचना एवं शोध-अनुसंधान के ग्रन्थों में एक सामाजिक समस्या या नारी-जीवन की समस्या के रूप में इसका आंशिक आलेखन हुआ है । किन्तु स्वतंत्र रूप से उपन्यासों में निरूपित वेश्या-जीवन पर कार्य करने की आवश्यकता थी । मेरा यह शोध-कार्य उस दिशा में उठाया गया एक कदम है । ध्यान रहे, यहाँ हमने हिन्दी उपन्यासों में वेश्या-जीवन का चित्रण जो उपलब्ध होता है, उसीको केन्द्र में रखा है ।

इस समूची प्रक्रिया में वेश्याओं के प्रति हमारा दृष्टिकोण मानवतावादी रहा है । उनके प्रति सहानुभूति और हमदर्दी का रहा है, घृणा और [illegible] नफ़रत का नहीं । अधिकांश उपन्यासकारों का दृष्टिकोण भी उसी प्रकार का रहा है । ऋषभचरण जैन ने वेश्या-जीवन पर काफी लिखा है । प्रेमचंद का "सेवासदन" तो एक प्रकार से "सामाजिक शल्य-चिकित्सा " का उपन्यास है । वेश्या-समस्या का उत्स उन्हें हमारी समाज-व्यवस्था तथा धर्म-व्यवस्था में दिखाई पड़ता है । हमारा यह विनम्र अभिमत है कि कोई भी स्त्री जन्मना (वंशानुगत वेश्याओं के अतिरिक्त) वेश्या

नहीं होती है । शारीरिक-त्रासदी के पूर्व उसे एक आत्मिक-त्रासदी से गुजरना पड़ता है । यहां तक कि जो वंशानुगत वेश्याएं होती हैं उनको भी यह कार्य , यह जिस्मफरोशी का व्यवसाय , अच्छा नहीं लगता है । वेश्या-जीवन से सम्बद्ध अनेक मिथकों को भी यहां तोड़ा गया है ।

अमूमन पचास-साठ उपन्यासों के आधार पर प्रस्तुत शोध-प्रबंध की आधार-शिला रखी गई है । विषय के सम्यक् निरूपण तथा उसे समुचित न्याय देने की गरज से इसे निम्नलिखित सात अध्यायों में विभक्त किया गया है :

1. विषय-प्रवेश
2. वेश्या-जीवन के विभिन्न आयाम
3. वेश्या-जीवन पर आधारित हिन्दी उपन्यास (1)
4. वेश्या-जीवन पर आधारित हिन्दी उपन्यास (2)
5. आलोच्य उपन्यासों के आधार पर वेश्याओं की विभिन्न कोटियां और उनके जीवन की प्रमुख समस्याएं
6. वेश्या-समाज : परिवेश एवं भाषा ।
7. उपसंहार ।

प्रस्तुत शोध-प्रबंध साहित्य की उपन्यास-विधा से सम्बद्ध है , अतः प्रथम अध्याय "विषय-प्रवेश" में उपन्यास-विषयक कतिपय आयामों पर विचार किया गया है । इसमें उपन्यास और यथार्थ , उपन्यास और मानवीय समस्याएं , युगबोध और मानवीय समस्याएं , उपन्यास के विकास के विभिन्न सोपान तथा वेश्या-समस्या : स्वरूप-विवेचन जैसे मुद्दों की पड़ताल की गई है । शोध-प्रबंध का विषय वेश्याओं के जीवन से सम्बद्ध है , जिसका सीधा सम्बन्ध मानव-जीवन के यथार्थ से है । उपन्यास यथार्थधर्मी विधा है , जो इस विषय के सर्वथा उपयुक्त है । अतः लगभग बारह-तेरह विद्वानों के

अभिमतों के साक्ष्य में इस तथ्य को आलोच्य विषय को केन्द्र में रखते हुए रेखांकित किया है । यहां उपन्यास और मानवीय समस्याओं तथा युगबोध और मानवीय समस्याओं के के पारस्परिक अन्तर्सम्बन्धों को भी दृष्टिपथ में रखा गया है । तदुपरांत औपन्यासिक विकास के विभिन्न सोपानों में पूर्व-प्रेमचंदकाल, प्रेमचंद-काल, प्रेमचन्दोत्तर-काल के उपन्यासों और उपन्यासकारों पर प्रकाश डाला गया है । प्रेमचन्दोत्तर औपन्यासिक विकास को पुनः चार खण्डों में विभक्त किया गया है -- प्रेमचन्दोत्तर से स्वतंत्रता-पूर्व तक का काल-खण्ड (1937- 1947 ई.), स्वातंत्र्योत्तरकाल (1947-1960 ई.), साठोत्तरी उपन्यास (1961-1980 ई.) तथा समकालीन उपन्यास (1980-अद्यावधि) । इन विभिन्न काल-खण्डों में उन उपन्यासों का खास जिक्र हुआ है जिनमें वेश्या-जीवन को चित्रित किया गया है । अध्याय के अन्त में वेश्या-समस्या के स्वरूप को विश्लेषित किया है ।

लगभग सवा सौ साल का इतिहास है हिन्दी उपन्यासों का, किन्तु एक बात निर्विवाद रूप से कही जा सकती है कि सभी काल के उपन्यासों में हमारी आलोच्य समस्या -- वेश्या समस्या -- का समुचित आकलन प्राप्त होता है । वेश्या का यह व्यवसाय आदि-अनादि काल से चल रहा है । ऐसा कहा जा सकता है कि विवाह-संस्था के स्थापित होने के बाद से देह का यह व्यापार किसी-न-किसी रूप में चल रहा है । प्राचीन साहित्य के अनेक ग्रन्थों में हमें वेश्याओं की उपस्थिति मिलती है । वात्स्यायन कामसूत्र के सात अध्यायों में से पंचम और षष्ठ अध्याय में वेश्याओं पर विस्तृत-गहन-बहुआयामी विवेचन उपलब्ध है । नायिका-भेद प्रकरण में भी वेश्या का उल्लेख एक नायिका के रूप में मिलता है । प्राचीन एवं मध्यकाल में (भारतीय इतिहास के) वेश्याओं को सम्मान की दृष्टि से देखा जाता था और उन्हें समाज का एक महत्वपूर्ण अंग माना जाता था । वेश्याएं अनेक गुणों और कलाओं का आगार थीं । उनके साथ काव्य, गान, नृत्य आदि जुड़ा हुआ

हुआ था । किन्तु आधुनिक काल में औद्योगीकरण , नगरीकरण , भूमंडलीकरण आदि ×××××× प्रक्रियाओं के चलते इनके स्वरूप में भी काफी परिवर्तन हुआ है और अब उसमें से संगीत, नृत्य इत्यादि का छेद उड़ गया है । एक तरफ जहां दरिद्रता और भीषण भूखमरी के कारण निर्दोष-निरीह लड़कियां वेश्याएं हो रही हैं , या उन्हें जबरन इस व्यवसाय में धकेला जा रहा है ; वहां उच्चवर्गीय एवं उच्च-मध्यवर्गीय महिलाएं एवं लड़कियां भौतिक सुखों की उपलब्धि के के लिए स्वेच्छया इस व्यवसाय में आ रही हैं । इसका पूर्णरूपेण व्यवसायीकरण हो चुका है ।

दूसरा अध्याय वेश्या-जीवन के विभिन्न आयामों से जुड़ा हुआ है । यह अध्याय पूर्णरूपेण समाजशास्त्रीय अध्ययन पर आधृत है । यद्यपि तथ्यों की पुष्टि हेतु बीच-बीच में कहीं उन्हें हिन्दी उपन्यासों से संपृक्त किया गया है । विभिन्न शब्द-कोशों एवं विद्वानों के आधार पर "वेश्या" शब्द की परिभाषा दी गई है । यहां वेश्यावृत्ति के विभिन्न कारणों को भी दर्शाया गया है जिनमें आर्थिक कारण , नारी की आर्थिक पराश्रितता , विवाह-विच्छेद , दहेज-प्रथा , विधवा-विवाह पर रोक , दुःखी वैवाहिक जीवन , स्त्री का विपुलवासनावती (निम्फो) होना , कुमार्ग में पड़ी लड़कियों की संगत , प्रेम-वंचना , माता-पिता के कुसंस्कार , पति की नपुंसकता , बुरा पड़ौस , सामाजिक कुरीतियां , आसान ऋण के कारण कर्जदार होते ×××× जाना , युद्ध , विडियो सीडी का दुरूपयोग आदि मुख्य हैं । यहां डा. एस.डी. पूणेकर की रिपोर्ट तथा समाजशास्त्री विलियम बोंगर के अभिमत को भी रखा गया है । इनके अतिरिक्त वेश्यावृत्ति के अन्य कारकों में औद्योगीकरण , नगरीकरण , मनोवैज्ञानिक कारक , धार्मिक कारक आदि कारकों भी परीक्षित किया गया है । यहां वेश्यावृत्ति के दुष्प्रभावों को भी चिह्नित करने का उपक्रम रहा है । वेश्यावृत्ति के दुष्प्रभावों में नारी-जाति का अपमान , व्यक्तित्व का विघटन , पारिवारिक

विघटन , सामाजिक विघटन , नैतिक अधःपतन , अपराध-वृद्धि , आर्थिक हानि , यौन-रोग इत्यादि को परिगणित किया गया है । भारत में वेश्यावृत्ति के नाना आयामों के स्पष्टीकरण हेतु इस विषय पर किए गए अध्ययनों और सर्वेक्षणों को भी यहां स्थान मिला है । इनमें मुंबई की वेश्याओं पर किया गया अध्ययन तथा आल इण्डिया मोरल एण्ड सोशल एसोसियेशन का सर्वेक्षण आदि मुख्य हैं । इसके उपरांत अध्याय के अन्त में वेश्याओं की विभिन्न कोटियों और प्रकारों पर विचार किया गया है । यह वर्गीकरण तीन आधारों पर हुआ है — /क/ वात्स्यायन कामसूत्र का का आधार , /ख/ समाजशास्त्रीय आधार तथा /ग/ आर्थिक आधार ।

वात्स्यायन कामसूत्र में हमें तीन प्रकार की वेश्याओं का वर्णन मिलता है — गणिका , रूपाजीवा और सामान्या । इसके अलावा एकचारिणी वेश्या पर भी वात्स्यायन ने विस्तार से विचार किया है । वेश्या होते हुए भी उसकी निष्ठा किसी एक पर होती थी । अन्यत्र वात्स्यायन ने वेश्याओं के दश भेद निर्धारित किए हैं — कुम्भदासी , परिचारिका , कुलटा , स्वैरिणी , नटी , शिल्पकारिका , प्रकाश-विनष्टा , रूपाजीवा और गणिका । इनमें गणिका सर्वश्रेष्ठ होती थीं जिनका राज-महलों में भी सम्मान होता था । समाजशास्त्रीय आधार पर वेश्याओं के अमूमन पन्द्रह प्रकार निश्चित होते हैं — प्रकट समूह , अप्रकट समूह , काल-गर्ल्स , होटेल वेश्याएं , रखैल वेश्याएं , वंशानुगत वेश्याएं , वासना-पीड़ित वेश्याएं , परिस्थितिजन्य वेश्याएं , अपराधी एवं पिछड़ी जातियों तथा जन-जातियों की वेश्याएं , धार्मिक वेश्याएं , पुरुष-वेश्याएं , बार-गर्ल्स वेश्याएं , मसाज वेश्याएं , प्रच्छन्न वेश्याएं और गौनहारिन वेश्याएं ।

आर्थिक आधार पर वेश्याओं को तीन वर्गों में रख सकते हैं — उच्चवर्गीय वेश्याएं , मध्यवर्गीय वेश्याएं और निम्नवर्गीय वेश्याएं । उच्चवर्गीय वेश्याओं में प्राचीन साहित्य में वर्णित अप्सराएं ,

यक्षिणियां तथा वात्स्यायन निरूपित गणिकाएं तथा आधुनिक काल की काल-गर्ल्स तथा होटल वेश्याओं का समावेश होता है । मध्य-वर्गीय वेश्याएं मध्यवर्ग से सम्बद्ध होती हैं और निम्नवर्गीय वेश्याएं एकदम सस्ती और निम्नवर्गीय लोगों केलिए होती हैं । अब वेश्याओं को "सेक्स-वर्कर " भी कहा जाता है । वेश्या-संगठनों का आग्रह है कि उनको "वेश्या" न कहकर "सेक्स-वर्कर" कहा जाए । सस्ती वेश्याओं के विस्तार xxxx को "लालबत्ती विस्तार " {रेडलाइट एरिया } कहा जाता है । आधुनिक काल में वेश्याओं के देखने के दृष्टिकोण में { विशेषतः लेखकों और कलाकारों के } एक निश्चित और गुणात्मक परिवर्तन आया है ।

तृतीय और चतुर्थ अध्याय में वेश्या-जीवन पर आधारित हिन्दी उपन्यासों का विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत है । तृतीय अध्याय में लगभग सत्रह उपन्यास हैं — परीक्षागुरु , आदर्श हिन्दू , स्वर्गीय कुसुम , मां , अंधेरी गली का मकान , सेवासदन , बुधुआ की बेटी , जनानी सवारियां , चम्पाकली , हिज हाईनेस , मयखाना, तीन इक्के , प्रेत और छाया , पर्दे की रानी , घरौंदे , कब तक पुकारूं और शेखर : एक जीवनी । परीक्षागुरु , आदर्श हिन्दू तथा स्वर्गीय कुसुम आदि प्रारंभिक उपन्यासों में वेश्या का चित्रण एक सामाजिक बुराई के रूप में हुआ है । "आदर्श हिन्दू" में तो वेश्या-समाज की उपादेयता इस तरह सिद्ध हुई है कि उनके अस्तित्व से हिन्दू नारियों xx के सतीत्व की रक्षा होती है । "स्वर्गीय कुसुम" में देवदासी वेश्या का चित्रण हिन्दी उपन्यास में पहली बार हुआ है । किन्तु उसकी देवदासी राज-घराने की होने के कारण बहुत-सा त्रासद स्थितियों से वह मुक्त है । इन उपन्यासों के आधार पर वेश्यावृत्ति की समस्या के मूल कारणों की पड़ताल की जा सकती है । इनके प्रमुख कारणों में अनमेल विवाह , दहेजप्रथा , पति-परिवार या समाज दारा उपेक्षा और उत्पीड़न , अशिक्षा , आर्थिक परतंत्रता, जीविका का प्रश्न , पिता या बड़े भाई के अभाव में लड़की पर

परिवार का आर्थिक बोझ पड़ना , घर में किसीकी असाध्य बीमारी, नारी की सच्चरित्रता पर पुरुष का अविश्वास , पुरुष की काम-लोलुपता, दलालों और कुटनियों का कुचक्र , नारी मन की दुर्बलता आदि को रेखांकित किया है । इन उपन्यासों के विश्लेषण के पश्चात् कहा जा सकता है कि छल-छद्म , झूठ , धोखाधड़ी , स्वार्थपरता , अर्थ-लोलुपता आदि दुर्गुण जहां वेश्याओं में पाये जाते हैं ; वहां कभी-कभी वफादारी ईमानदारी की मिसाल भी मिल जाती है । जहां कुलवधू समझीं जाने वाली स्त्रियां कई बार आंतरिक या मानसिक दृष्टया हरजायी होती हैं , वहां कई बार सती-साध्वी स्त्रियां भी वेश्याओं के रूप में पाई जाती हैं । "चम्पाकली" उपन्यास की चम्पाकली इसका ज्वलंत उदाहरण है ।

ऋषभचरण जैन तथा उग्र आदि उपन्यासकारों ने समाज के नग्न यथार्थ को चित्रित किया है , परिणामस्वरूप उनके उपन्यासों में हमें वेश्या-जीवन का चित्रण विशेष रूप से मिलता है । वेश्या-जीवन के कई आयाम यहां खुलते चले जाते हैं । प्रेमचंद के "सेवासदन" उपन्यास में हमें "गौनहारिन" वेश्या का रूप मिलता है । प्रेमचंद ने एक समाजशास्त्री की भांति वेश्या-समस्या पर विचार किया है और वेश्या-समाज के निर्माण के कारणों की सूक्ष्म मीमांसा प्रस्तुत की है । इलाचन्द्र जोशी के उपन्यास " प्रेत और छाया " का नायक लघुता-ग्रंथि के कारण वेश्यागामी हो जाता है , फलतः नायक के ब्याज से उपन्यास में अनेक वेश्याओं का चित्रण हुआ है । "पर्दे की रानी" उपन्यास की नायिका स्वयं वेश्या नहीं है , किन्तु वेश्यापुत्री है , अतः उसका मनोविश्लेषणात्मक चित्रण हमें प्रस्तुत उपन्यास में उपलब्ध होता है । इधर शिक्षित वेश्याओं की समस्या भी आकार ले रही है । "प्रेत और छाया" तथा " शेखरः एक जीवनी" में उनका विश्लेषणमूलक चित्रण हमें प्राप्त होता है । "कब तक पुकारूं " में करनट जाति में व्याप्त जातिगत वेश्यावृत्ति का रूप

मिलता है । करनट जाति की स्त्रियों को अपने तथा अपने मर्दों के अस्तित्व की रक्षा हेतु वेश्यावृत्ति का सहारा लेना ही पड़ता है । इसकी आदी हो जाने के कारण उनमें किसी प्रकार का अपराध-बोध भी नहीं पाया जाता । "सतीत्व" यहां धन-मूल्य नहीं , बल्कि श्रम-मूल्य है । अध्याय में चर्चित उपन्यासों के आधार पर कहा जा सकता है कि अधिकांश उपन्यासकारों ने वेश्याओं का चित्रण सहानुभूति और संवेदना के साथ किया है ।

चतुर्थ अध्याय में लगभग उन्नीस उपन्यासों की विस्तृत चर्चा है जिनमें वेश्या-जीवन का चित्रण किसी-न-किसी रूप में हुआ है । ऐसे उपन्यास हैं — त्यागपत्र , मुक्तिबोध , व्यतीत , दशार्क , मैला आंचल , सूखता हुआ तालाब , रेखा , नदी फिर बह चली , इमरतिया , कांचघर , आगामी अतीत , मछली मरी हुई , बोरीवली से बोरीबन्दर तक , रामकली , किस्सा नर्मदाबेन गंगुबाई , कबूतरखाना , मुरदाघर , अल्मा कबूतरी , सलाम आखिरी आदि-आदि । इनके अतिरिक्त गोदान , गबन , कंकाल , तीन वर्ष , अप्सरा , शराबी , काजर की कोठरी , स्वर्णमयी , हृदय का कांटा , मास्टर साहब , इन्दुमती , पतन , मंगलप्रभात , घृणामयी , अवसान , दिन के तारे , चढ़ती धूप , नदी नहीं मुड़ती, छाया मत छूना मन , प्रेम अपवित्र नदी , पतझर की आवाजें , बंटता हुआ आदमी , ढहती दीवारें आदि लगभग 23-24 उपन्यासों की संक्षिप्त चर्चा की गई है ।

इन उपन्यासों में से प्रकट समूह की वेश्याओं का चित्रण व्यतीत, दशार्क , नदी फिर बह चली , आगामी अतीत , बोरीवली से बोरीबन्दर तक , मुरदाघर , सलाम आखिरी , पतझर की आवाजें , अवसान , घृणामयी , मंगल प्रभात , काजर की कोठरी , शराबी , अप्सरा , गबन आदि उपन्यासों में मिलता है । ग्रामीण क्षेत्र की अप्रकट वेश्याओं का चित्रण मैला आंचल , सूखता हुआ तालाब , अल्मा कबूतरी आदि उपन्यासों में है । नगरीय

क्षेत्र की वेश्याओं का चित्रण नदी फिर बह चली (पटना), बोरीवली से बोरीबन्दर तक (मुंबई), मुरदाघर (मुंबई), सलाम आखिरी (कोलकाता), पतझर की आवाजें, मास्टर साहब (दिल्ली), बंटता हुआ आदमी (मुंबई) आदि उपन्यासों में प्राप्त होता है ।

इनमें कुछ विपुलवासनावती (निम्फो) प्रकार की वेश्याएं हैं । "रेखा" की रेखा, इमरतिया की गौरी, "मछली मरी हुई " की कल्याणी, "किस्सा नर्मदाबेन गंगूबाई " की नर्मदा, "जल टूटता हुआ " की डलवा, "सलाम आखिरी " की माया देवनार आदि की गणना इनके अन्तर्गत की जा सकती है । इनमें से रेखा, नर्मदा और डलवा को वेश्या की प्रकट व्याख्या के अनुसार वेश्या की कोटि में नहीं रख सकते ।

आजकल की हाई सोसायटी में अब "काल-गर्ल" प्रकार की वेश्याएं होटलों में उपलब्ध करायी जाती हैं । नदी फिर बह चली, मछली मरी हुई, सलाम आखिरी, ढहती दीवारें, छाया मत छूना मन, चढ़ती धूप, डाक बंगला आदि उपन्यासों में इस प्रकार की वेश्याओं का विवरण प्राप्त होता है । कुछ खाते-पीते संपन्न परिवार, व्यापारी परिवार या राजनीतिक वर्ग की प्रतिष्ठित गृहिणियां केवल मौज-मस्ती के कारण या बोरियत मिटाने के लिए वेश्यागिरी करती हैं । ऐसी वेश्याओं का चित्रण नदी फिर बह चली, सलाम आखिरी जैसे उपन्यासों में उपलब्ध हुआ है ।

राजनीतिक फायदों के लिए स्त्रियों का उपयोग किया जाता रहा है । इस प्रवृत्ति का चित्रण दर्शाके, नदी फिर बह चली, नदी नहीं मुड़ती, अल्मा कबूतरी, इमरतिया, सलाम आखिरी आदि उपन्यासों में पाया जाता है । नागार्जुन द्वारा प्रणीत "इमरतिया" नरसिंहराव शुक्ल कृत "देवदासी" प्रभृति उपन्यासों में धार्मिक कोटि की वेश्याओं का चित्रण हुआ है ; तो रामकुमार भ्रमर कृत "कांचघर"

में मराठी लोकनाट्य "तमाशा" में काम करने वाली औरतों का चित्रण हुआ है । यह लगभग तयशुदा होता है कि अपने न्यस्त हितों की रक्षा के लिए उन्हें अप्रकट प्रकार की वेश्यागिरी भी करनी पड़ती है । ये तमाशा मंडलियां जहां-जहां जाती हैं, वहां-वहां के सत्ता-संपन्न लोगों को उन्हें खुश रखना पड़ता है । मियाद बढ़ाने के लिए कई बार उन्हें कलक्टर या कमिश्नर के सामने भी बिछ जाना पड़ता है । जैनेन्द्र द्वारा प्रणीत उपन्यास "दशार्क" की रंजना को किस कोटि में रखा जाए यह एक समस्या है, क्योंकि न उसे वेश्या कहा जा सकता है, न कालगर्ल । अपनी घर-गृहस्थी से उबे हुए लोगों में वह नयी काम-चेतना भरने का कार्य करती है । इसके लिए वह तगड़ी फिस भी वसूल करती है । पश्चिम में इस प्रकार की प्रोफेशनल महिलाओं की एक विभावना विकसित हुई है जो मनोवैज्ञानिक दृष्टया नपुंसक व्यक्तियों में पुनः पुंसत्व के प्राण फूंक देती हैं, किन्तु यह कार्य वे देह के माध्यम से ही संपन्न करती हैं, जबकि रंजना अपने इस सारे खेल में देह को बीच में नहीं लाती है । इसे हम वात्स्यायन काल की वह गणिका कह सकते हैं जो सब कलाओं में दक्ष है पर जो किसीके लिए भी समर्पिता नहीं है ।

इन उपन्यासों में दो ऐसे उपन्यास हैं जो केवल और फकत केवल वेश्याओं के जीवन पर लिखे गये हैं — जगदम्बाप्रसाद दीक्षित कृत "मुरदाघर" और मधु कांकरिया कृत "सलाम आखिरी" । इन उपन्यासों में क्रमशः मुंबई की झोंपड़पट्टी और कोलकाता के सोनागाछी के लालबत्ती विस्तार की वेश्याओं के जीवन को दर्द, सहानुभूति और संवेदना और मानवीय-स्पर्श के साथ उकेरा गया है । "सलाम आखिरी" को हम अनुसंधानमूलक उपन्यास भी चाहें तो कह सकते हैं, क्योंकि लेखिका ने इन विस्तारों की प्रत्यक्ष मुलाकात लेकर, वहां की बासिन्दा वेश्याओं से प्रत्यक्षतः मिलकर उनके जीवन का सच्चा दस्तावेज प्रस्तुत किया है । यह आकलन व आलेखन

सत्य के निकट का प्रतीत होता है । इसका एक प्रमाण यह है कि लुइज़ ब्राउन की पुस्तक " यौन दासियां :xशेष ऐशिया का सेक्स बाज़ार" में जो सोनागाछी का वर्णन उपलब्ध होता है, मधु कांकरिया का वर्णन हूबहू उससे मेल खाता है । यह तथ्य ध्यानार्ह रहे कि "यौन दासियां " का प्रकाशन बाद का है । प्रस्तुत उपन्यास को हम वेश्या-जीवन का महाकाव्य कह सकते हैं ।

पांचवा अध्याय है : " आलोच्य उपन्यासों के आधार पर वेश्याओं की विभिन्न कोटियां और उनके जीवन की प्रमुख समस्याएं" । इस अध्याय में हिन्दी उपन्यासों के आधार पर वेश्याओं की विभिन्न कोटियों को निर्धारित किया गया है । यह वर्गीकरण पांच आधारों पर हुआ है : /क/ शास्त्रीय आधार पर , /ख/ परिवेश के आधार पर , /ग/ लालबत्ती विस्तार की वेश्याएं , /घ/ हाई-फाई सोसायटी की वेश्याएं और /च/ धार्मिक और राजनीतिक क्षेत्र की वेश्याएं । शास्त्रीय आधार पर वेश्याओं की लगभग 15 कोटियां उपलब्ध होती हैं । परिवेश पर आधारित वर्गीकरण में ग्रामीण परिवेश और नगरीय परिवेश की वेश्याओं को वर्गीकृत किया है । ग्रामीण क्षेत्र की वेश्याएंxxxxxx प्रायः वेश्याओं के अप्रकट समूह में आती हैं । नगरीय परिवेश की वेश्याओं में ये दोनों कोटियां मिलती हैं । लालबत्ती विस्तार की वेश्याओं को छः कोटियों में विभक्त किया गया है : /1/ झोंपड़पट्टी की वेश्याएं , /2/ लाइनवालियां , /3/ कमरेवालियां , /4/ अधिया सिस्टम पर चलने वाली वेश्याएं , /5/ फ्लाइंग वेश्याएं और /6/ कोठेवालियां । हाई-फाई प्रकार की वेश्याओं को पुनः पांच कोटियों में विभक्त किया है : /1/ नृत्यांगना या तवायफ , /2/ कुलीन धनाढ्य घरानों की वेश्याएं , /3/ काल-गर्ल , /4/ मोडलिंग और फिल्म-क्षेत्र की वेश्याएं और /5/ सिंगापोर की मसाज वेश्याएं । धार्मिक क्षेत्र की वेश्याओं को तीन कोटियों में रखा है — /1/ देवदासियां , /2/ मधुआइनें

और /3/ धर्मानुयायी संपन्न कुलीन घरानों की विपुलवासनावती स्त्रियां । राजनीतिक क्षेत्र की वेश्याओं को निम्नलिखित तीन संवर्गों में रखी गयी हैं — /1/ राजनीतिक लोगों से जुड़ी हुई महिलाएं, /2/ राजनीति के लिए प्रयुक्त महिलाएं और /3/ राजनीतिक पार्टियों से जुड़ी हुई महिलाएं ।

अध्याय के विभाग {ख} में वेश्या-जीवन की प्रमुख समस्याओं को आलोच्य उपन्यासों को केन्द्रस्थ रखते हुए निरूपित किया गया है । वेश्याओं की प्रमुख समस्याओं को आठ शीर्षकों के तहत रखा है — /1/ आर्थिक समस्याएं, /2/ पारिवारिक समस्याएं, /3/ सामाजिक समस्याएं, /4/ शारीरिक समस्याएं, /5/ काम-कुण्ठा-जनित समस्याएं, /6/ शैक्षिक समस्याएं, /7/ मनोवैज्ञानिक समस्याएं और /8/ वैधानिक या कानूनी समस्याएं ।

छठे अध्याय में "वेश्या-समाज : परिवेश एवं भाषा " पर विश्लेषणात्मक ढंग से अध्ययन प्रस्तुत किया गया है । स्पष्टतया इसके तीन विभाग हैं — /क/ वेश्या-समाज, /ख/ वेश्याओं का परिवेश और /ग/ वेश्याओं द्वारा प्रयुक्त भाषा । वेश्या समाज के अंतर्गत तमाम कोटियों की वेश्याएं, उनसे जुड़े हुए लोग तथा वेश्याओं के बाल-बच्चों आदि का समावेश होता है । मोटे तौर पर देखा जाए तो वेश्याओं के तीन स्तर दृष्टिगोचर होते हैं — /1/ हाई-फाई सोसायटी की हाई-फाई वेश्याएं, /2/ मध्यस्तरीय वेश्याएं और /3/ निम्नस्तरीय वेश्याएं । हाई-फाई वेश्याएं सुशिक्षित, अंग्रेजी पढ़ी-लिखीं, ऊंची सोसायटी की होटेल-विमेन, मोडेल्स तथा फिल्म-तारिकाओं से होती हैं । प्राचीन काल की गणिका और मध्यकाल की राज-दरबारों की तवायफों को भी इस वर्ग में रख सकते हैं । "मछली मरी हुई " की कल्याणी, "छाया मत छूना मन " की वसुधा और कंचन, "नदी नहीं मुड़ती " की सुषमा, "कृष्णकली" की पन्ना और माणिक आदि को हम इस वर्ग में रख

सकते हैं । इनका "रेट" काफी हाई होता है । प्रायः उनके लिए विदेशी शराब का इन्तजाम भी करना पड़ता है । मध्यस्तरीय वेश्याएं मध्यवर्गीय लोगों केलिए होती हैं और उनके चार्ज सौ- दो सौ रूपयों से xxx लेकर एक-दो हजार तक के होते हैं । झोंपड़-पट्टी की और लालबत्ती विस्तारों की वेश्याएं प्रायः निम्नस्तरीय वेश्याओं के अन्तर्गत आती हैं । xxxxxxxxxxxxxxxxx ये रोज धंधा करती है और खाती हैं । एक दिन गर ग्राहक न मिले तो खाने के लाले पड़ सकते हैं । इनका "रेट" सबसे कम होता है । "मुरदाघर" , " सलाम आखिरी" , " नदी फिर बह चली " आदि उपन्यासों में इस प्रकार की वेश्याएं मिलती हैं ।

वेश्या-समाज में वेश्या-व्यवस्था से जुड़े हुए लोग भी आते हैं । वस्तुतः ये लोग इस व्यवसाय को चलाते हैं , अतः इनको इस व्यवसाय के हाथ-पैर कह सकते हैं । वेश्याओं के दलाल , भड़वे , बिचौलिये आदि इसमें आते हैं । त्रितारक या पंचतारक होटलों के मैनेजर , महानगरों के समीपस्थ रिसोर्ट के मैनेजर , मंदिर के पुजारी , विधवाश्रम या महिलाश्रमों के संचालक , समाजसेवी , पार्टी-वर्कर आदि भी कई बार अप्रकट रूप से यह भड़वागिरी का काम करते हैं । वेश्या-समाज में वेश्याओं के बाल-बच्चे , या कभी-कभार उनके पति या प्रेमी , जिनको सोनागाछी में "बाबू" कहा जाता है भी सम्मिलित हैं ।

अध्याय का दूसरा विभाग वेश्याओं के परिवेश से सम्बद्ध है । विश्लेषण की सुविधा हेतु उसे चार शीर्षकों में विभक्त किया है — /1/ स्थानगत परिवेश , /2/ कालगत परिवेश , /3/ हाई-फाई प्रकार की वेश्याओं का परिवेश और /4/ मध्यवर्गीय और निम्नवर्गीय वेश्याओं का परिवेश । प्रथम दो परिवेशों में क्रमशः स्थान (प्लेस) और काल (टाइम) के आधार पर वेश्याओं के परिवेश पर विचार किया है । हाई-फाई प्रकार की वेश्याओं का

परिवेश हमें "कृष्णकली" , " नदी फिर बह चली " , "नदी नहीं मुड़ती , "छाया मत छूना मन " , "डाकबंगला" , "मछली मरी हुई " , "नावें" , "पतझड़ की आवाजें " , "चिड़ियाघर" , "ढहती दीवारें " , "चम्पाकली " , "हिज हाईनेस " आदि उपन्यासों में उपलब्ध होता है । यहां तमाम प्रकार की सुख-सुविधा और ऐशो-आराम के साधन होते हैं ।

NSA MSU

मध्यवर्गीय और निम्नवर्गीय वेश्याओं का परिवेश हमें "नदी फिर बह चली " , " आगामी अतीत " , "बोरीवली से बोरीबन्दर तक " , "कबूतरखाना " , "मुरदाघर " , "सलाम आखिरी " , "अंधेरी गली का मकान" , "अवसान" आदि उपन्यासों में प्राप्त होता है । "नदी फिर बह चली" , "सलाम आखिरी" , "कबूतरखाना" आदि कुछ उपन्यास ऐसे हैं जिनमें उक्त दोनों प्रकार के परिवेश प्राप्त होते हैं । निम्नवर्गीय परिवेश निहायत गन्दा , घिनौना और बीभत्स होता है । लालबत्ती विस्तार की वेश्याएं दड़बेनुमा कमरों में रहती हैं , जहां किसी प्रकार की सुविधा नहीं होती है । मुंबई में फुटपाथों और पाइपों में भी वेश्याएं रहती हैं । उनके इन गन्दे-घिनौने कमरों में देवी-देवताओं के चित्र अवश्य होते हैं ।

अध्याय के तीसरे खण्ड में वेश्याओं की भाषा पर विचार किया गया है । वैज्ञानिक एवं विश्लेषणात्मक आकलन हेतु इस खण्ड को चार संवर्गों में विभक्त किया है — /1/ सामान्य भाषा या लेखकीय भाषा , /2/ सोनागाछी की वेश्याओं की भाषा , /3/ मुंबई की झोंपड़पट्टी की ~~अड्डा~~ वेश्याओं की भाषा तथा /4/ वेश्या-समाज में प्रयुक्त कुछ विशिष्ट शब्द ।

कुछ अपवादों को छोड़कर जिनमें वेश्या-जीवन का चित्रण मिलता है ऐसे उपन्यासों में वेश्याओं ने भी प्रायः सामान्य या लेखकीय भाषा का ही प्रयोग किया है । यहां लेखकों ने केवल इस

बात का ध्यान रखा है कि वेश्या यदि मुस्लिम है तो भाषा में कुछ उर्दू का पुट ज्यादा दिया है और हिन्दू वेश्याओं की भाषा प्रायः सामान्य या लेखकीय है । प्रेमचंदपूर्व काल तथा प्रेमचंद काल के लेखकों ने वेश्याओं की भाषा में भी ज्यादा वजनी गालियों का प्रयोग नहीं किया है । बहुत हुआ तो हरामी , वेश्या , छिनाल जैसी गालियों से काम चलाया है ।

सोनागाछी की वेश्याओं की भाषा प्रायः बंगाली है । अतः "सलाम आखिरी" की लेखिका ने उनका निम्न हिन्दी में रूपान्तरण रूपान्तरण किया है । परन्तु उसे बंगला भाषा का संस्कार कहिए या कुछ भी उसका स्तर बहुत नीचे नहीं गया है । एक-दो स्थानों पर कुछ वजनी गालियां हैं ।

मुंबई की झोंपड़पट्टी की वेश्याओं की भाषा मुख्यतः हमें "मुरदाघर" उपन्यास में प्राप्त होती है । यह भाषा "बम्बइया-भाषा" है , जिसे आजकल "टपोरी-लैंग्वेज़ " भी कहा जाता है । उसमें हिन्दी के अतिरिक्त मराठी , गुजराती , पंजाबी , मद्रासी आदि भाषाओं के शब्द और "टोन्स " मिलते हैं । यहां ~~मरबी~~ गाली-गलोच में किसी प्रकार का कोई परहेज नहीं बरता गया है । अतः "प्यूरिटियन" प्रकार के लोग व आलोचक ~~इसम~~x इस पर नाक-भौं ~~सिकोड़~~xx सिकोड़ सकते हैं ।

वेश्या-समाज की भाषा में कुछेक शब्द ऐसे मिलते हैं जिनके कुछ विशिष्ट अर्थ होते हैं जो उनके ही लिए हैं । यहां शाब्दिक अर्थ नहीं लगता है । ऐसे शब्दों में बैठना , शोर्ट-रेट , लोंग-रेट , मंगलाचरण , अधिया सिस्टम , नथ उतारना , छुकरी , लाइनवालियां , फ्लाइंग वेश्या, बांधा गोभी , बाबू , सिझाई , घंधुआगीरी , चुकरी प्रथा , विषकन्या , अग्निकन्या , बहनजी , स्पैर-व्हिल आदि की गणना की जा सकती है ।

यह निर्दिष्ट किया जा चुका है कि विभिन्न औपन्यासिक समीक्षा-ग्रन्थों , शोध-प्रबंधों , शोध-ग्रन्थों , कृति-लक्षी समीक्षाओं आदि में जगह-जगह पर वेश्या-समस्या का निरूपण किया गया है । मोटे तौर पर हमने यह भी देखा कि जिन लेखकों ने वेश्या-जीवन चित्रित किया है , उनका रवैया उनके प्रति काफी संवेदनापूर्ण रहा है । आलोचकों ने भी प्रायः उसीका अनुसरण किया है । परन्तु इन तमाम उपन्यासों को लेकर इस प्रकार का कार्य हुआ नहीं था । वेश्याओं के प्रति जन-साधारण या समाज का जो रवैया है , वह घृणा , नफरत और हिकारत से भरा हुआ है । अतः इस दिशा में काम करना शायद किसीने पसंद न किया हो । मानव-जीवन की या नारी-जीवन की समस्याओं को लेकर भी काम हुए हैं , किन्तु जब हम किसी एक समस्या की ओर उन्मुख होते हैं , तो समाजशास्त्र , मनोविज्ञान , इतिहास , पुराण , पुरातत्व आदि शास्त्रों की ओर जाना जरूरी हो जाता है और ज्यादा-तर लोग साहित्येतर विद्या-शाखाओं की ओर जाना शायद पसंद भी नहीं करते हैं । मुझे यह कहते हुए अतीव प्रसन्नता होती है कि मेरा शोध-विषय अन्य शास्त्रों की भी दरकार रखता है और ऐसा किया भी है ।

अन्ततः यह निवेदित है कि मेरी अपनी सीमाएं हैं , यदि यह शोध-कार्य भविष्यत् अनुसंधित्सुओं को यत्किंचित् भी लाभ पहुंचा सका , तो मैं अपने विद्याकीय श्रम को सार्थक समझूंगा । इस दिशा में अभी और भी शोध-कार्य हो सकता है । किसी एक औपन्यासिक प्रवृत्ति में वेश्या-जीवन को लेकर कार्य हो सकता है । गुजराती और हिन्दी को लेकर इस प्रकार का कार्य संभव है । मैंने केवल उपन्यासों का ही आधार लिया है , वेश्या-जीवन पर व्यावहारिक फिल्ड वर्क करके उसके आधार पर भी ऐसा कार्य हो सकता है । अलग-अलग विधाओं को लेकर भी शोध-कार्य

संपन्न किया जा सकता है । " वादे वादे जायते तत्वबोधाः " में मेरा अटूट विश्वासxहैxx विश्वास है । इस समूची शोध-प्रक्रिया के दौरान मैंने स्वयं अपने में कुछ परिवर्तन देखे हैं । मेरासx मेरा यह कार्य मुझे शोध व समीक्षा की दिशा में और भी अग्रसरित करे ऐसी मेरी कामना है ।

अंत में शापेन हावर की निम्नलिखित पंक्ति के साथ विरमता हूं —

" ये वेश्याएं सर्वश्रेष्ठ पाप हैं, क्योंकि ये पुण्य की संरक्षिका हैं । "

xxxxxxxxxxxxxxxx